शुद्ध बुद्धि समाज की कामधेनु : आचार्य महाश्रमण
(जीवन विज्ञान शिक्षक–प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न)

लाडनूँ 27 सितम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में दिनांक 23 से 27 सितम्बर, 2013 तक जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में देश के विभिन्न क्षेत्रों से 17 प्रतिभागियों ने भाग लेकर जीवन विज्ञान की सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षण पश्चात् आयोजित सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक परीक्षा में श्री जितेन्द्र मुराली सोनी, नवी मुम्बई ने प्रथम, श्री गौतमचन्द गादिया, सूरत ने द्वितीय तथा श्री स्वप्निल दिलीप सोलंकी, नवी मुम्बई ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

शिविर का प्रारम्भ पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगलपाठ द्वारा हुआ। इस अवसर पर प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने पूरे मनोयोग से शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु शिविरार्थियों को प्रेरित किया। शिविर का समापन अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के दूसरे दिन 'जीवन विज्ञान दिवस' को हुआ। इस अवसर पर शिविरार्थियों एवं धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि हमारे ऋषियों ने विद्या एवं आचार को मोक्ष का द्वार बताया है। आज शिक्षा के प्रति जनता एवं सरकार दोनों में जागृति आयी है। बड़ी मात्रा में विद्यालयों का खुलना इसका प्रमाण है। अभिभावक अपने बालकों को ज्ञानवान, स्वावलम्बी एवं संस्कारवान बनाने के उद्देश्य से विद्यालयों में भेजते हैं। शिक्षण संस्थानों के संचालकों को इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए कि वे इस कसौटी पर कहाँ हैं। आचार्यश्री ने कहा कि बौद्धिक विकास के साथ–साथ भावात्मक विकास भी आवश्यक है। बुद्धि का उपयोग समस्याओं को सुलझाने में होना चाहिए न कि समस्याएं पैदा करने में। शुद्ध बुद्धि समाज के लिये कामधेनु होती है। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ ने शिक्षा में नैतिकता को समाहित करने के लिये एक नये अवदान जीवन विज्ञान का प्रतिपादन किया। जैन दर्शन के अनुसार अहंकार, क्रोध, प्रमाद, रोग एवं आलस्य शिक्षा में बाधक होते हैं। इनसे मुक्ति दिलाने में जीवन विज्ञान की शिक्षा उपयोगी बनती है। परिश्रम पर विशेष जोर देते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि परिश्रम के साथ अहिंसा और मैत्री जुड़ जाये तो सामाजिक जीवन में विग्रह समाप्त होकर आनन्द की प्राप्ति होती है। आपने जीवन विज्ञान के कार्य को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हुए कहा कि इससे एक अच्छी पीढ़ी का निर्माण संभव है।

समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान लोक सेवा आयोग के सदस्य वी.के. दशोरा ने नैतिक शिक्षा पर बोलते हुए कहा कि वैश्विक स्तर से लेकर वैयक्तिक स्तर तक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। आज इस बात पर चिन्ता एवं चिन्तन चल रहा है कि नैतिकता को शिक्षा में कैसे समाहित किया जाये। पश्चिम के प्रचार के कारण आज हमारे यहां धर्म शिक्षा अर्थात् नैतिक मूल्यों की शिक्षा को बेमानी माना जा रहा है। आपने कहा कि नैतिक मूल्यों की रक्षा केवल कानून बनाकर नहीं बल्कि सामाजिक जागरण की प्रक्रिया से संभव है। इसके लिये ''मैं नहीं आप'' इस भाव को आगे रखने की आवश्यकता है। ''स्व'' का इतना विस्तार करें कि वह ''आप'' बन जाये। उन्होंने गीता के उपदेशों को नैतिक शिक्षा का माध्यम बताते हुए कहा कि पुरुषार्थ चतुष्ट्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नैतिक समाज का आधार है। इनमें दया, त्याग, अहिंसा आदि निहित है। प्रत्येक व्यक्ति यह सोचे कि मैं दूसरों से ऐसा व्यवहार नहीं करूंगा, जो अन्यों के द्वारा मेरे प्रति किया जाना मुझे पसन्द नहीं है, तो यह नैतिकता की कसौटी होगी।

मंत्री मुनि मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी ने फरमाया कि – मनुष्य जन्म अनेक अर्थों को लेकर आता है, वह पशुवत नहीं जी सकता। हमें अपनी शक्तियों को पहचान कर उनका सही उपयोग करने की आवश्यकता है। शक्ति का असीम स्रोत हमारे भीतर है। जो भीतर से शक्तिशाली होता है, वह भय, प्रलोभन एवं बाहरी दबावों से मुक्त होता है। विभिन्न चैतन्य केन्द्रों को जागृत कर शक्ति प्राप्त की जा सकती है। विद्यार्थी को अपने अध्ययन एवं चरित्र पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जीवन विज्ञान की शिक्षा विद्यार्थियों को शक्ति सम्पन्न बनाने का उपक्रम है।

प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने कहा कि – प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान, अणुव्रत के दो पंख हैं। जीवन विज्ञान से हमें आनन्दपूर्ण एवं सौहार्दपूर्वक जीवन जीने की दिशा मिलती है। सफलता प्राप्ति में संकल्प, धैर्य और विश्वास पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने सही मुद्रा से सही भावों का अन्तर्सम्बन्ध बताते हुए जीवन में सही सोच विकसित करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि इससे व्यक्ति और समाज दोनों सुखी रहेंगे। आपने महाप्राण ध्वनि एवं संकल्प का प्रायोगिक अभ्यास भी करवाया।

नवी मुम्बई के प्रशिक्षणार्थी श्री जितेन्द्र मुराली सोनी ने नवी मुम्बई महानगरपालिका के विद्यालयों में जीवन विज्ञान के द्वारा हजारों विद्यार्थियों को प्रभावित करने के बारे में बताया। प्रशिक्षण पश्चात आयोजित परीक्षा परिणाम की जानकारी देते हुए अकादमी के सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों के नामों की घोषणा की एवं शिविर रिपोर्ट प्रस्तुत की। कार्यक्रम का प्रारम्भ कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत मंगलसंगान से हुआ। विरेन्द्र भाटी 'मंगल' ने संचालन किया।

शिविर का औपचारिक समापन अहिंसा भवन में मुनिश्री किशनलालजी के सान्निध्य में हुआ। जैन विश्व भारती के निदेशक राजेन्द्र खटेड़ ने इस अवसर पर शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए जीवन विज्ञान को आचार्य महाप्रज्ञ प्रणीत महान अवदान बताते हुए प्रशिक्षण में सीखे ज्ञान को बांटने का आह्वान किया। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र भी वितरित किये। शिविर प्रशिक्षण व्यवस्था में ओमप्रकाश सारस्वत, हनुमान मल शर्मा, रामेश्वर शर्मा एवं महेन्द्र कुमावत का महत्वपूर्ण योगदान रहा। शिविरार्थियों की आवास एवं भोजन व्यवस्था तुलसी अध्यात्म नीड़म में की गई, एतदर्थ जीवन विज्ञान अकादमी परिवार आभारी है।

प्रेषक–
(हनुमान मल शर्मा)
सहायक निदेशक
जीवन विज्ञान अकादमी,
जैन विश्व भारती, लाडनूँ